क्योंकि वह जिन्दा है

कविता सग्रह

स्वतंत्रता, समानता के लिए संघर्षरत साथियों को।

क्योंकि वह जिन्दा है

कविता सग्रह

सरल विशारद



कलासन प्रकाशन

कल्याणी भवन

मॉडर्न मार्केट बीकानेर

प्रकाशक

 ✆ 0151 526890

कलासन प्रकाशन

कल्याणी भवन मॉडर्न मार्केट बीकानेर

मुख्य वितरक कामेश्वर प्रकाशन
तेलीवाड़ा चौक बीकानेर 5 [राज]
✆ 0151 524330

प्रथम संस्करण जनवरी 1996

मूल्य सत्तर रुपये मात्र

मुद्रक कल्याणी प्रिंटर्स बीकानेर (राज)

आवरण सज्जा पारस भंसाली

Kyon Kee Waha Jinda Hai (Poetry)
By Saral Vishard Price 70/ Page 80

अपनी ओर से

एक तरफ से देखे तो इस विशाल पृथ्वी पर रहने वाले विविध प्रका' के जीवा ओर उन्ह जीवित रखने वाले समृद्ध प्राकृतिक पर्यावरण के सामने मनुष्य की क्या बिसात' कितना छोटा अदना और अकिंचन है वह। दूसरी तरफ आदमी की महत्ता का प्रतिपादन करने के लिए महाभारतकार ने लिखा है कि मनुष्य से श्रेष्ठ और कोई नहीं। बात अपनी जगह सही है। मनुष्य के पास अन्य प्राणिया की तुलना मे अधिक बौद्धिक क्षमता हे। इसीलिए आज पृथ्वी पर अन्य प्राणियो की तुलना म उसी का राज है। पहले वह अन्य ताकतवर प्राणियो के सामने कमजोर और बौना था। ऐसे मे उसे सबके साथ की जरूरत थी। सामाजिकता और सहयोग की भावना ने मनुष्य को सामूहिक ताकत और चेतना दी। उसमे पारस्परिक त्याग प्रेम और सदभावना जागी। सुखी व शात जीवन उसकी कामना थी। न कोई छोटा था न कोई बड़ा। समता का साम्राज्य था।

आज वह परिदृश्य बदल गया। हम अनेक प्रकार की दीवारो और खॉचो म बॅट गए। त्याग और समर्पण स्वाहा हो गए। समता का भाव तिरोहित हो गया। मनुष्य ही नही पूरा समाज शासन तत्र और व्यवस्था सब की चाल बदल गई। ऐसे मे व्यक्ति का जीवन कैसा नारकीय और विषादग्रस्त बन गया' व्यक्तिवाद क अधड़ ने सामाजिकता के सस्कारों की होली जला दी। आत्मकेन्द्रितता और बेगानापन इस छोर से उस छोर तक व्याप्त हो गया।

ऐसा नहीं कि पृथ्वी पर मानव प्रेम त्याग समर्पण शाति और समता क मूल्यो का कोइ नामलवा भी न रहा हो। कई मनीषियो के विचारो ने पृथ्वी को स्वर्ग तुल्य सुदर समृद्ध एव सुखी बनाने की दृष्टि दी है। बल्कि ऐसे कई आदोलन भी चले है जहॉ पददलिता और मेहनतकशो को शोषण से मुक्ति दिलाकर सुखी जीवन जीने की सुदर व्यवस्था दी है। अच्छे विचार कभी नहीं मरते और सभी लोग रोटी के लिए अपने पेट और अपने परिवार के लिए जिदा नहीं रहते। आज हालात बदल गए है। हममे से लाखो-करोड़ो लोग शोषण के शिकार है। उनके साथ अन्याय होता है। मौत आसान हो गई है और जीना दूभर। देखते सब हैं पर सब विवश है। ऐसे माहौल मे उपजी ये कविताएँ मेरे निजी अवलाकन और अनुभवो की परिणतियाँ है।

मैं जा कहता हूँ उसे तू लिख और मुझसे भी बड़ा दिख।" बड़ा तो मैं नहीं बन सका लेकिन लिखा वही जो उसने लिखने को कहा वह जो मेरा समय है मेरी परिस्थितियाँ मेरा परिवेश और मेरी ज़मीनी सच्चाईयाँ। वे जैसा जैसा मुझे कहती गईं मे खामाशी के रगो से उकेरता हुआ क्योंकि वह ज़िंदा है की सच्चाईया तक पहुँच पाया हूँ, राह कठिन है चलना सहज सरल है यात्रा जारी है।

सग्रह म आपको भाषाई पहाड़ झरने देवदार बादलो के चित्र रसवती वर्षा नहीं मिलेगी बल्कि एक सपाट दरकती हुई धरती मिलेगी जहाँ कहीं कहीं काई फुनगी नजर आ जाए तो आश्चर्य न करे। यह भी जमीनी सच्चाई है। मैं ऐसी ही ठोस सच्चाई से रूबरू होते हुए उसका कहा उसी की जुबानी आप तक पहुँचाता रहा हूँ। आपकी पसद और पहचान कैसी है, आप ही बता सकते हे। प्रतिक्रिया मुझ तक पहुँचेगी तो और निखार आयेगा-- बात कहने के अदाज म मिजाज़ मे।

क्योंकि वह ज़िन्दा है की जल्दी जिल्दसाजी मे मेरे प्रेरक रहे हैं स्नेही मित्र एम एम कल्याणी एव भाई रामनरेश सोनी। ये नहीं होते तो वह ज़िन्दा नहीं मिलता और मेरी बेटी अणिमा नहीं होती तो यह नाम नहीं मिलता मै सभी स्नेहीजनो का आभारी हूँ कि क्योंकि वह जिन्दा है काव्य सग्रह आपके सामने है। इत्यलम।

गोपेश्वर बस्ती
बीकानेर (राज)

-सरल विशारद

अनुक्रम

आदमी अकेला	1
हर वार	3
फूल और वच्चे	5
आर्त्तनाद	7
गज़ल	9
गज़ल	11
अरी ज़िंदगी	13
वसन्त	14
तलाश	16
पहली वार	18
लोग	20
आदमी की फ़ितरत	23

क्या फरक पड़ता है 25
यह कैसा शहर है? 27
तुमने बहुत परेशान किया 29
मेरे बाद 31
साथ साथ चलना 33
गजल 35
सरगम बिखर जायेगी 36
मेरा है 37
क्योंकि वह जिन्दा है 39
एक भय 42
रेत भर 44
बीच नदी मे 45
प्रतिरोध करो 47
सीना तान 48
बोल भाई बोल 50
खुले खुले है द्वार 53
मै तो दर्पण हूँ 56
हिन्दूस्तान हमारा है 58
दीप शिखा 60
प्रहरान 62
सबध 64
जल 67
हरा भरा मै 68
जिन्दा है 69

आदमी अकेला

होता है आदमी अकेला
दु ख म पीड़ा मे
सूखी नदी-सा
सुन्दर और प्रशान्त।

खोया खोया-सा
भीतर से किन्तु
रोया-रोया-सा
एकात
नम ऑखो-सा
कॉटो मे
गुलाबो-सा
होता है आदमी
अकेला दु ख मे पीड़ा मे।

पीड़ा का पैगम्बर होता है
ॲधेरी ऑधियो म
टिम टिमाता दीपक
दिखाता है राह
ढॉकता अभावो के पहाड़
दिखती नही है
पीड़ा के पेड़ की
हिलती पत्तियॉ, डालियॉ
जड़ो तक जमा होता है दर्द।

पोस-मास की ठिठुरन
बाहर आती है
हर बार की तरह
बिना छप्पर के रात गुजारता हूँ
अच्छे दिनो की आशा मे
जागता हूँ रात-रात भर
हर बार।



गज़ल

हर जख्म प मरहम किया है मेने
यूँ कलेजे को छलनी किया हे मैने।

उनकी उल्फत को इबादत माना हे मेने
यूँ जमाने को दुश्मन बनाया है मेन।

उनके घर को ही अपना घर समझा मैंने
यूँ दर-दर का खुद को बनाया हे मेने।

इक इशारे पर अरमान हवा हो गये
उनकी नज़रो मे यूँ कातिल बनाया मेने।

जिनकी रगो मे रमा है लहू मेरा
उन्ही की नफरत को पाया हे मेने।

जमाने के सरताज कहलाते जो है
गर्दिश मे उनको गले लगाया हे मने।

खुदगर्ज हे दुनिया खुदगर्ज है लोग
खुदगर्जी को खुद ही ठुकराया हे मेने।

ॐ

गज़ल

जिनकी गिर रही थी छते
वे घर हमे मिले।

जिनके विखर रहे थे पर
वे कवूतर हमे मिले।

हो रहे थे जो लापता ज़माने मे
खोजते घर-घर हमे मिले।

जिन्हे पूछता नही था कोइ
वे ही हमारे परिचित निकले।

न खत्म हो सिलसिला कभी
ऐसे ही दर्द मुँह-वाये मिले।

जिस जिस सफर म हम निकले
लोग उलझे हुए परेशॉ ही मिल।

हुजूम मे रहने की तमन्ना थी
तन्हा लोगो के काफिले मिले।

ज़िद थी हॅसेगी ज़िदगी इक दिन
जब भी मिले उदास उदास मिले।

न हारगे हम जुल्म ढाते रहो।
जीने के या हजार बहाने मिले।

दुनिया निर्मम होती

रो मत बेटी
दुनिया निर्मम होती।
ललचाई आँखें
तकती हैं सपने
मोहब्बत के जंगल में
नागफनी-से अपने
अपनों की बरछी से
डर मत बेटी।

सीधे से लोगों की
दॉकी-सी करतूत
गंदे की कलसी में
काँटे हैं अकूत।
कुदरत का छल देख
रो मत बेटी।

मंजिल तो आँखों में
गर्दिश में राह
चलना है तुझ को
थाम मेरी बाँहें।
कल तो अपना है
मत बेटी।

काली रातो के
दिन है उजाले।
आँसू से धो ले
आँखो के प्याले।
विषपायी मै हूँ
तू मत पी बेटी।

रोने से दृष्टि
हाती है धुँधली
राता मे दिन की
परछाँई हिलती।
भरमा के जाल यहाँ
फँस मत बेटी।

तट की नादानी
लहरो को सहनी है।
सपनो की शैतानी
अपने को कहनी है।
कथनी का बोझ कभी
ढो मत बेटी।
रो मत बेटी
दुनिया निर्मम होती।



अरी ज़िदगी

अरी ज़िदगी
क्या-क्या रग दिखाये तूने!

भरी दुपहरी सूरज डूबा
बात-बात मे दर्पण टूटा।
ऑखा मे सपने थे कल के
सजी सेज और कगन टूटा।

भरी कचहरी कत्ले-आम
न्याय को सूँघ गया है सॉप
घर मे घुस कर शील हरण
रक्षक करें अपहरण।

कदम उठे तो पथ गायब था
खुली ऑख तो सब गायब था
गाने को आतुर था जब मे
कठो मे से स्वर गायब था।

जीत-जीत कर हार रहा हूँ
अकड़-अकड़ कर टूट रहा हूँ
मे हूँ ऐसा बाण अनोखा
छूट छूट कर टूट रहा हूँ।

अब क्या ओर पढूँगा बोलो
ऑसू हे ऑखो की पोथी
किस किस को कैसे दिखलाऊँगा
मे हूँ बद दद की कोठी।



म कविता पढ़ता हूँ
लोग मुझे सुनते समझते जा रहे हे
वदलाव के बादलो म
काधती रोशनी
महसूस करते जा रहे हैं
लोग वर्फ नहीं
लावा वनते जा रहे हैं।

ॐ

तपा हुआ सोना
कुदन हो जाता है
खतरो मे आदमी खरा होता
खुदा होता है
खतरे के किसी भी दौर मे
खामोश नही रहा जाता।

मुकाबला किया जाता है
या
किनारे हुआ जाता है
तुम खतरा तो नही हो
आग और पानी हो
दूर तुम से नही हुआ जाता
ऐसे मे
खामोश नही रहा जाता
इन्सान की फितरत है
हरकत करना।

ॐ

क्या फर्क पड़ता है
टूटे दिलो के नग्मो से
बिके हुए बयानो से
लाभ और मुनाफा
साख है
बाजारू सस्कृति की।
क्या फर्क पड़ता है
किसी की साँस टूटने से और
किसी की बिकने से।

बोलो मत जुबाँ कटती है
डाकू को डिग्री मिलती है
जितना बड़ा करे घोटाला
उतनी अधिक साख बढती है
यह आज की ताजा खबर है
यह कैसा शहर है?



बच्चों को जुखाम
पत्नी को खाँसी
बैठ गया पूरे घर मे ज्वर
फैलने लगा प्लेग
वीरान हुआ शहर
दहशत म लोग
मुनाफे के गिद्धो मे
लगी होड़
इस बार भी
बहुत परेशान किया तुमने
सब हैरान
राज हे खुशहाल
जन ह परेशान
न तुम्हे जान को कहूँ
न तुम्हे रोकूँ
हम बहुत ह गमगीन
आने वाले दिन बहुत सगीन।
इस बार
तुमने बहुत परेशान किया बारिश।

ॐ

मेरे बाद

पीड़ा की पहाड़ियो के बीच
खड़ा म
उस ओर
मानसरोवर मे खिले
नीलकमल की चाह मे
ऊँचाई को नापते-नापते
थक गया हूँ
आधी उम्र
पिघल गई पर्वतो को
लॉघते लॉघते
कहीं भी नद- नाला
या कोई स्रोत
सुख का नहीं दिखा
कुछ मेघो ने
मर्माहत मन को बहलाया
और पहाड़ियो मे खो गये
दर्द के देवदारु
सामने आ गये
कब सुस्ताया नहीं मालूम
कब मुस्कराया पता नही
अपने मे खोया
नीली झील मे खिले
नील कमल की चाहत म
चलता रहा

चलता रहा
कहाँ ओर कब
खत्म होगी
मेरे पीड़ित पर्वतो की ऊँचाइयाँ
तन का तेनसिह
थक रहा हे
क्या होगा
जब नही रहूँगा मे
मेरी हसिनी साधा का
बँधी हे जो
नीलकमल से
नीली झील म निर्मल नीर से
मेरे मन मे
मेरे बाद
क्या होगा
पीड़ा की अनपढी पोथियो का।

साथ साथ चलना

तुम जिस रास्ते जा रहे हो
जाता है अधी घाटी की ओर
मे जा रहा हूँ जिस आर
उधर नजर आता है सूरज
तुम तोड़ते-मसलते हो फूल-कुसुम
मे सॅवारता हूँ बाग-बगीचे
प्रिया के जूड़े
बच्चो के झूले।

सभव नहीं है दोस्त
साथ-साथ चलना
श्रम से परहेज
सुविधा की सेज
मकसद हे तुम्हारा
श्रम की वदना
शोषण के खिलाफ
उठता है हाथ हमारा
तुम खरगोश
और मे मृग-शावक।

सभव नही है दोस्त
साथ-साथ चलना
तुम घाटियो मे भटकते
हीरे-जवाहरातो मे सोते

सूरज का स्नेह
हवा का धानी आँचल
नही देख पाते
मे समदर पार
लहरो के साथ
सगम का सुख ओर
सृजन की दिशा खोजता
तुम जिस दिशा की ओर जाते
नही होता कोइ देश
मुझे हर देश म
मिल जाते दिशा-निर्देश
तुम मुनाफे की मशीन
और म
कल्याण का मसीहा
सभव नही है दोस्त
साथ-साथ चलना।

❦

गज़ल

जिसे अपना समझा गर निकला
आँसू अपनी आँख का जहर निकला।

समझा गया जिसे करीब अपने
खिलाफत मे वही बदस्तूर निकला।

जिनकी चर्चा थी अमन के पहरेदार म
उन्हीं की जेब से सूली खजर निकला।

बहुत गुमान था जिस पर हमको
वही शख्स चलाता तीर निकला।

बहुत चाहती मुझे सुबह और शाम
घर स उसकी मेरा जनाजा निकला।

उनकी ख्वाहिश थी मे कुछ बोलूँ
मेरा जुमला उन्हीं के खिलाफ निकला।

किस पर करूँ यकीन किसे गैर मानूँ।
यहाॅ तो हर सोना मुकम्मल खोटा निकला।

सरगम बिखर जायेगी

दुखती हुई रगो को मत छेड़
सारी सरगम बिखर जाएगी।

घाव जो तुमने दिए
भरे नहीं हरे के हरे है
रिसती हुए मवाद को मत पौछ
उगलियो पर चिपक जाएगी।

एक खामोशी है साथ
नही अकेला हूँ म आज
खिल्लियॉ मत उड़ा खामोशी की
सारे शहर मे हलचल हो जाएगी।

सोए हुए को सोंए रहने दे
सपनो के सपेरे सोये रहने दे
खामोश पड़ी बीन को मत छेड़
सारी फिजा सॉप-सॉप हो जाएगी।

मौजो की मार से मर्माहत कश्ती
किनारे से बॅधी है लुटा के हस्ती
बद पड़े छिद्रों को मत छू
रिस रिस पानी से भर जाएगी।

दुखती हुई रगो को मत छेड़
सारी सरगम बिखर जाएगी।



मेरा है

यह जो अँधेरा है
मेरा है
तू क्यो दीप बुझाए बैठी?

मै अभिशप्त अँधेरा ढोता
सन्नाटे के शिला खड पर
सॉसे गिनता ऑसू पीता
कोलाहल से दूर
तू क्यो मुँह फुलाये बैठी?

म बीते कल का सपना हूँ
तू सूरज की प्रथम किरण
म खोया हुआ हस्ताक्षर हूँ
तू कविता की पहली सिहरन
मै इतिहास भोगता
तू क्यो ऑख भिगोये बैठी?

उजियारा कम उम्र और
सपने होते है छोटे
सफर बहुत लम्बा है बेटे
सुख के सदा पड़गे टोटे।
मै तो खोटा खूँटा हूँ
तू क्यो राख रमाये बैठी?

क्या करे किसी गर की बात
हताश और पस्त हिम्मत थी सारी जमात
सुनकर मोत का एलान
लकिन वे सब शर्मिदा हे
क्या कि वह अब भी जिन्दा हे।
जिन्दा हे
मेहनतकशो की आँख मे
मुक्ति चीता की साँस म
शोषक के खिलाफ
जारी जग म
क्यूबा के कवियो मे
चीन के चितेरा मे
वियतनाम के धानी खेतो म
जिन्दा हे

लाल चौक की चहल पहल म
रूस के विटर-हाल मे
ऐसा एलान मत करना आईन्दा
क्योंकि वह अब भी है ज़िन्दा
फसल काटते हँसिये मे
लोहा कूटते हथौडे म
जुल्म के खिलाफ
उठी औरत की
वद मुट्ठियो म
कुर्वानी की राह चलते
नोजवान कदमा मे
ज़िन्दगी की
खूबसूरती के वास्ते
यही एक रास्ता उम्मदा हे
इसलिए वह अब भी जिन्दा हे

जिन्दा है
क्योंकि वह श्रम पर टिके
सामाजिक साम्य का
सपना है
हाथो मे जिसके
अमन का परिन्दा है
इसलिये
वह मरा नहीं जिन्दा है
मत करना ऐसा एलान आईन्दा
क्योंकि वह
ज़िन्दा है।

ॐ

एक भय

एक भय
मारे वेठा है कुडली
जीवन के आस पास

कव कहाँ कोन-सा घर
हो जाए श्मसान।

आतक की आग मे
पजाव ओर आसाम
धू-धू हो रहा
कश्मीर का शवाव
जर्रा-जर्रा देश का ववाद
क्या सोचगी
पीढियाँ मेर वाद।
एक भय मारे वठा हे कुडली
मेरे आस-पास।

दुध मुँहे और झुरियो वाले
सव हें परेशान
कल हो गये फिर कुछ तमाम
कल होगे फिर कुछ तमाम
जलती है वस्तियाँ सरेआम
गीता कुरान होते वदनाम
मेहतर से मत्री तक सव हैरान परेशान

एक मानव-बम्ब ने
बदल दिया पूरा इतिहास
सभ्यता हुई बदनाम।
एक भय मारे बेठा हे कुडली
जीवन के आस-पास।

खून से लथपथ
लाशो का अम्बार
होगा नही बेकार
तवारीख म जुड़ेगा
एक नया अध्याय
गुमराहो को मिलेगा
फिर नया पेगाम।
मेहनतकश आवाम अडिग हे
जातियो के सामन
दखना हे जोर कितना
कातिलो की बॉह मे
रुकेगा नहीं
अब अमन का परचम
टूटेगा नहीं मनुजता का सगम
अखड है मेरा दिलो-जिगर
मेरा वतन,
होन न देंग इसे उदास।
एक भय मारे बेठा हे कुडली
मेरे आस-पास
ले रहा आखिरी सॉस
एक भय जो
बेठा हे मरे आस पास!

रेत भर

तुम तो किनारा कर गये
उठ हुए ज्वार मे
किस दिशा को गये
पता नही
मेरे पास
दूसरी कश्ती भी नहीं
खोज सकूँ ज्वार-भाटे म तुम्हे।
अब यह सन्नाटा
सारी उम्र साथ रहेगा
तुम्हारे होने का अहसास
हर पल उफनता रहेगा।
ऐसा अक्सर मुझसे
लोगा के साथ हुआ हे
होता रहेगा
भरी दोपहरी मे
अँधेरा सूरज को डुबोता रहेगा।
रोशनी की गेर-माजूदगी
खुभती रहेगी
और इसी सन्नाटे मे
किसी दिन सहसा
साँस-सरिता सूख जायेगी
यादो की
रेत भर रह जायेगी।



बीच नदी मे

तुम्हे छोड़ते हुए भय लगता है
ओर बचाना भी सभव नहीं
मे बीच नदी मे
ले आया हूँ तुम्हे
पीठ पर लादे-लादे अतीत।

दूर-दूर तक कहीं भी कोई
नाव द्वीप, तट, बॉसवन
नहीं दिखता
पानी ओर पानी
सिफ पानी का घेराव
सन्नाटा बुनता समय।

ऐसा नहीं कि
किनारा कभी मिला ही नही
अक्सर छिपी हुइ काई की
मुलायमियत मे फिसलता गया
ओर बीच नदी म आ गया
तुम्हारे साथ
स्मृतियो का भार उठाये।

घाट-घाट का पानी पीने के बाद
होना सुहाता है
बेघाट बीच नदी म

सीना तान

मेहनत कर मजदूरी मॉग
नही मिल तो सीना तान।
यह धरती आकाश तुम्हारे
सारे जग के सुख तुम्हारे
अपने हक का हिस्सा मॉग
नही मिले तो मुट्ठी तान।

नहरा मे पानी तू लाता
जगल को कश्मीर बनाता।
खेता की फसलो पर नाज
भठी मे फौलाद पकाता।
तेरा करतव तेरी शान
सब मे अपना हिस्सा मॉग
नहीं मिले तो हॅसिया तान।

जुल्म खोर जल्लादो को
दूध पिला तू छट्टी का।
शोपक ओर शैतानो को
तू नगी तलवार दिखा।
खुद को कर फोलाद
हथौड़ा हाथो म तू थाम।
श्रम को तू पहचान।

जग से नफरत अमन का सा
लूटेरो की तू बरबादी।
तेरा हक, हक की लड़ाई
सबको साथ लिये चल साथी।

अपली पात लम्बी कर
अपना सीना तान।
महनत कर मजदूरी माँग।
नही मिले तो सीना तान।

बोल भाई बोल

बोल भाई बोल
सरल भाई बोल
साफ साफ बोल
रोज-रोज बोल।

गॉव-गली शहर म
मौहल्ले-चापाल म
ससद म सड़क प
नता के बगले पे
अफसर की कोठी म
महॅगाई की मार आर
काड दर काड
बार बार खोल।

गोली से गोले से
साधु के झोले से
आदम की सेना स
लग रही आग
बढ रहे श्मसान
झुलस गया रामलाल
बिलखता रमजान।
पोथी आ पुराण से
लिपटी इस लाट की
पोल-पोल खोल।
नूरिये जमालिये की

चतुरी-चमरान की
राधे की बिटिया को
रघुवा के बेटुआ को
जिन्दा जलाया जावे
सारा गाँव हार जावे
कैसा यह राज है
कैसा यह समाज है
कैसी यह सरकार है
खुलम खुल्ला बोल।

धर्मों के नाम पर
पथा के सवाल पर
नगी तलवार है
गोली आरम्पार है।
आतक के राज को
हाय-हाय बोल।

माटी के दुश्मन को
मुरदाबाद बोल
एकता के वेरी को
राम नाम सत बोल
धर्म के ढोल की
पोल सारी खोल
बोल भाई बोल

पुरखो की जागीर को
साँझी तस्वीर का
आपस की खीर को
श्वान सारी सरहद के
ताक रहे घाव स।

महापौर चुप क्यो?
कैसा यह खेल है।
अवसर की ताक मे
बैठा बूढा शेर है।
चातरफा वार कर
सब को आवाज दे
सारे फ्रट खोल दे।
गोपनीय गठबधन की
गॉठ गॉठ खोल
पोल सारी खोल।
बोल भाई बोल
सरल भाई बोल।
रोज रोज बोल।

खुले खुले है द्वार

खिड़कियाँ दरवाजे
बद पड़े कमरे
यहाँ तक कि पिछवाड़ा भी
खोल दिया है एक साथ
कितना खुला-खुला है घर
कितनी उदार और लोचदार हूँ मै।
पलक-पाँवडे बिछाये
बैठी हूँ सिहद्वार
"वेगा पधारोनी बादीला भरतार"-
बाँदियाँ गाती है दिन-रात
कोई रुकावट नहीं है देव !
खुले है द्वार सदैव।

एक अधा बाप है
चौखट के कौने मे
बैठा अपने आप है
मंदिर पै मरता
अतीत मे जीता है।
माँ जो बहरी है
अगले जन्म के लिये
जपती है माला
भीतरी हिस्से मे लेटी है।
एक गबरु भाइ है
पीटता है कारखाने मे हथौड़ा

मै तो दर्पण हूॅ

मुझ से क्यो नाराज
मै तो दर्पण हूॅ।
जो जैसा है वैसा ही दिखता है,
काला काला,
गोरा गोरा ही दिखता है
निर्वस्त्र को सवस्त्र
सजे-सॅवरे को नगा नहीं दिखाता
मैनका हो या मथरा
जो जैसा है उसे वैसा बताता हूॅ
मै तो एक समर्पण हूॅ
मुझ से क्यो नाराज
मै तो दर्पण हूॅ।

जो कुरूप है उन्हे सुन्दर नहीं बताता
गद्दारो को देश भगत नही बताता
शोषक को शोषक, शोषित को शोषित
दूध को दूध पानी को पानी कहता
मेरा धर्म जो जैसा वैसा उसे दिखाता।
मै तो दर्पण हूॅ
अपना धर्म निभाता
मुझे से क्यो नाराज
मै तो दर्पण हूॅ

राजा हो या रक नेता हो या जन
सब को खोल-खोल रखता हूॅ

हूलिया और हवाला सरे आम करता हूँ
कल तू सुन्दर था मै सुन्दर था
आज झुर्रियाँ चेहरे पै
मै कुरूप हो गया क्यो?
मै तो कल भी हँसता था
अब भी हँसता हूँ
मुझ से क्यो नाराज
मै तो दर्पण हूँ।

मेरा पानी मेरा है
मै सब का पानी दिखलाता
मुझ को तोड़ दिया तो
तुम टुकड़ो मे बँट जाओगे
मेरा क्या, मै तो
बना रहूँगा दर्पण ही टुकड़ो मे
मुझ से क्यो नाराज
मै तो सब का अन्तर्मन हूँ
मै तो दर्पण हूँ।

तुम रोते तो मैं रोता हूँ
तुम हँसते तो मै हँसता हूँ
तुम मुझ मे हो
मैं तुझ मे हूँ
फिर क्यो दूरी आज
सच्चाई पर टिका हुआ है
मेरा सरगम मेरा साज।
मुझे से क्यो नाराज
मै हूँ तेरा हमराज
मै तो दर्पण हूँ
मुझ से क्यो नाराज?

हिन्दुस्तान हमारा है

आजादी की रक्षा करना
अमर शहीदों का नारा है
हिन्दुस्तान हमारा है
हिन्दुस्तान तुम्हारा है।

फिर फिरगी वेश बदलकर
आने को तैयार है
नई नीतियो के नक्शे मे
नेता सब लाचार है
देश बेचने वालो सुनलो
भारत छोड़ो नारा है
हिन्दुस्तान हमारा है।

सुरसा-सी बढती महॅगाई
पढे-लिखे बेकार है
छॅटनी की चलती है छुरियॉ
जीना भी दुश्वार है।
करना रक्षा जीवन की
जीवन हमको प्यारा है
हिन्दुस्तान हमारा है।

सीमा पर शैतान खड़े हे
ऑगन मे है फैली आग
तेली दोनो ओर खड़े है

जाग मजूरे जाग।
देश को बचाना है
वक्त ने पुकारा है
हिन्दुस्तान हमारा है।

बदूको मे लोकतत्र है
घोटालो मे शेर
धर्म बना धोखे की टट्टी
तत्र हो रहा ढेर
लोकतत्र की रक्षा करना
सविधान का नारा है
हिन्दुस्तान हमारा है।

उठो भगत, आजाद उठो
सारा देश पुकारे
बापू की पूजा करते है
बापू के हत्यारे।
आजादी खतरे मे साथी
इसको आज बचाना है
हिन्दुस्तान हमारा है।



दीप-शिखा

भरी दुपहरी
सूरज डूबा
फिर भी
अँधेरे के आगे
मेरा शीश नहीं झुका।
घर मे मेरे
अनजली मशाले
कई पड़ी थीं
मै रोशनी का बटा
मुझे किसी अँधेरे के आगे
झुकने की क्या पड़ी थी
अभी अनजली
मेरे हाथो निर्मित
मार भगाने अँधियारे को
जलने को
दीप शिखा तैयार खड़ी थी।
एक अकेली दीप शिखा से
सारा ऑगन जगमग-जगमग
कोई सूरज मुझे बताये
क्या है उसका अन्तर्द्वन्द्व
जिससे जगमग मेरा घर।
ओ मेरी दीप शिखा,
जा किसी के सूने ऑगन
कुडली मारे बैठा हा

कोई एक अँधेरा
गुप-चुप
उस आँगन को कर दे जगमग।
जलना तभी
सार्थक होता
जब औरों का भी घर
जगमग होता।
ओ मेरी दीप-शिखा,
भीतर से बाहर तक
जलते हुए
जगाना सबको
लक्ष्य बने सदैव तुम्हारा
जा किसी सूने आँगन
ओ मेरी
अलबेली दीप शिखा।



प्रहसन

नाथो के नाथ
बद किए किंवाड़
सगीनो के साये मे
सोये थे।
धँसी हुयी ऑखे
फटेहाल लाचार
बाहर एक अनाथ
बॉधे हुए हाथ
प्यासा और भूखा
दर्शन का भूखा
करता इन्तजार
जय नाथो के नाथ की
करता हर पल ध्यान।
सहसा खुला सिहद्वार
कठी-डोरा डाल
ले गये दरबार
दर्शन कराये और
लात मार फैक दिया
मदिर के बाहर
पुष्कर के पानी से
धोया गया गर्भ-द्वार
तुलसी-गगाजल के छींटे पड़े
यत्र-तत्र
अद्‌भुत यह दृश्य था

नेपथ्य मे
नायक का उठा
वरद हस्त था।
बच गई नाक
प्रगति की आज
भूखा अनाथ
पसारे हुए हाथ
कुनबे सहित
खड़ा था अब भी
प्रभु के द्वार
परलोक सुधारने
अगले किसी प्रहसन का
करता इन्तज़ार
जय नाथो के नाथ की।



सबध

सबध टूटते नहीं
बनते है सबध
एक बार
बस एक बार।
आदमी की अस्मिता के
फूल और गध के
प्यास ओर पानी के
जीने की आशा के
सबध टूटते नही
बनते है सबध
एक बार
बस एक बार।
माँ की ममता के
प्रेमिका के
पत्नी के
भाई और बहन के
निजता के समर्पण के
सबध बनते हैं
एक बार
बस एक बार
टूटते नही
टूटती है
जड़ता
अहम की अखडता

ना समझी से उपजी अज्ञानता
एक बार बस एक ही बार
होता है कोई किसी का बेटा
किसी का भाई, किसी का दोस्त
रहता है
इतिहास म बस वैसा का वेसा

सबध कमल नाल है
देह की साँस है
मेहदी का रग
अपनो का सग है
देह का रग और
अपनो का सग छूटता नही
बनता है सबध
एक बार
बस टूटता नहीं।

मे जो हूँ तुम्हारा
तुम्हारा ही रहूँगा
मानो चाहे न मानो
सबधी बना रहूँगा
जो हो चुका हूँ एक बार
सज्ञा जो बन गई एक बार
नाम जो मिल गया रिश्तो को एक बार
टूटता नहीं
सबध बनते हे
टूटते नहीं बार-बार
हवा की तरह
तैरते रहते हे
बने हुए सबध

हरा-भरा मै

सब ने किया बाहर
रहा अकेला भीतर
पर भरा-भरा।
चाहत सब को बाहो मे भरने की
आसमान से सीने मे रखने की।
पर सब ने किया किनारा
रहा भँवर मे न्यारा
पर भरा-भरा।
भरी सभा मे विदुर-वेदना
कुद हो गई सजग चेतना
चीर-हरण मेरी पीड़ा का
देख सभी निस्तब्ध हो गये
सबने किया तिरस्कृत-
रहा अकेला पर खरा-खरा।
जीने के लिये लड़ना पड़ता है
हर चोट को सहना पड़ता है।
समदर की बदमिजाजी
मौजो की मसखरी
मल्लाह को मझधार मे झेलना पड़ता है।



धनुर्धर के शर-सा
कुती की जीवेषणा-सा
अस्मिता के लिये
पुकारती कृष्णा के
खौलते आँसू-सा
सभ्यता के सकट को
झेलता
टूटता-जुड़ता
कान्त कल्पना का
परिन्दा
अब भी है जिन्दा
नहीं है अपने पर
शर्मिन्दा
क्यो कि वह है
जिन्दा।

